Dr. Jaya
Deptt. of Sociology
B.A Part-2 (Hons)
Paper-4, Unit-5
Lecture series:-67

Date:- 10/07/20

Topic — Types of Research Design

3) Diagnostic Research Design

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि अनुसंधान कार्य का आधारभूत उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति तथा ज्ञान की वृद्धि है। परंतु यह भी हो सकता है कि अनुसंधान कार्य का उद्देश्य किसी समस्या के कारणों के संबंध में वास्तविक ज्ञान प्राप्त करके उन समस्या के समाधानों को भी प्रस्तुत करना हो। इसी प्रकार की अनुसंधान प्ररचना को निदानात्मक अनुसंधान प्ररचना कहते हैं। अर्थात् विशिष्ट सामाजिक समस्या का निदान की खोज करने वाले अनुसंधान कार्य को निदानात्मक अनुसंधान कहते हैं। इस प्रकार के अनुसंधान में अनुसंधानकर्त्ता समस्या का हल प्रस्तुत करता है, न कि स्वयं उस समस्या को हल करने के प्रयास में जुट जाता है। समस्या का हल करना समाज सुधारक, प्रशासक तथा नेताओं का काम होता है। अनुसंधानकर्त्ता केवल वैज्ञानिक पद्धतियों के द्वारा समस्या के कारणों को जान लेने के बाद उसका उचित समाधान किस ढंग से सर्वोत्तम रूप में हो सकता है इस बात की खोज करता है। इसीलिए निदानात्मक अनुसंधान कार्य में समस्या का पूर्ण एवं विस्तृत अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से करके समस्या की गहराई में पहुँचने का प्रयास किया जाता है जिससे कि समस्या के प्रत्येक संभावित कारण का पता ठीक ढंग से लग सके। इस

इस प्रकार की खोज इस कारण की जाती है, क्योंकि समस्या-विशेष का हल तत्काल ही करने की आवश्यकता होती है। संभावित हल को ध्यान में रखते हुए

Scanned with CamScanner

उपकल्पना का निर्माण किया जाता है जिससे कि अध्ययन कार्य वैज्ञानिक ढंग से किया जा सके।

4) Experimental Research Design — परीक्षणात्मक अनुसंधान प्ररचना

प्रयोगशाला में प्रयोग की तरह दो चरों के पारस्परिक संबंध का अध्ययन करने के लिए बनाई जाती है। इसमें एक नियंत्रित (Controlled) समूह बनाया जाता है तथा दूसरा प्रायोगिक (Experimental) समूह। नियंत्रित समूह को जैसे वह है वैसे ही रहने दिया जाता है, जबकि प्रायोगिक समूह में जिस प्रकार का प्रभाव देखना है उसको प्रकाशकाल (Exposure) किया जाता है। अध्ययन में वैज्ञानिक विधि के सभी चरण अपनाये जाते हैं।

परीक्षणात्मक अनुसंधान के तीन प्रकार होते हैं।

i) After-only Experiment — इसके अंतर्गत सभी दृष्टि से प्रायः समान विशेषताओं व प्रकृति वाले दो समूहों को चुन लिया जाता है जिनमें से एक समूह नियंत्रित समूह और दूसरा परीक्षणात्मक समूह कहलाता है। नियंत्रित समूह में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं लाया जाता है, जबकि परीक्षणात्मक समूह में किसी एक कारक के द्वारा परिवर्तन लाने का प्रयत्न किया जाता है। इस प्रकार यदि प्रथम समूह दूसरे समूह से भिन्न हो जाता है तो उसी कारक को उस परिवर्तन का कारण मान लिया जाता है। ex:- दो समान समूहों में से एक समूह में, जिसे परीक्षणात्मक समूह माना गया है, सह-शिक्षा का प्रसार किया जाए। कुछ समय के पश्चात् उस समूह की तुलना दूसरे से की जाये। यदि दोनों में कुछ अंतर (जैसे प्रेम-विवाह की अधिक घटनाएं) देखने को

मिलता है तो वह सह-शिक्षा के कारण सम्भव होगा।

2) Before-after Experiment – इसके अंतर्गत अध्ययन के लिए केवल एक ही समूह का चुनाव किया जाता है और उसी का अध्ययन एक अवस्था विशेष के पहले और बाद में किया जाता है। इन दोनों अध्ययनों के अंतर को देखा जाता है और उस परिवर्तित परिस्थिति का परिणाम मान लिया जाता है।

Ex: संयुक्त परिवार प्रणाली का अध्ययन औद्योगीकरण के पूर्व और फिर औद्योगीकरण के पश्चात किया जाता है और यदि इन दोनों अध्ययनों की तुलना से यह पता चले कि औद्योगीकरण के पूर्व संयुक्त परिवार संगठित अवस्था में था जबकि औद्योगीकरण के पश्चात उसमें विघटन की प्रक्रिया आरंभ हो गई तो संयुक्त परिवार के विघटन को औद्योगीकरण का परिणाम मान लिया जायेगा।

3) ExPost-facts Experiment – इस प्रकार का परीक्षण किसी ऐतिहासिक घटना का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। पर ऐतिहासिक घटनाओं को दोहराना अनुसंधानकर्ता के वश में नहीं होता। अतः वह दो समूहों का चुनाव करता है जिनमें से एक में वह घटना (जिसका कि अध्ययन उसे करना है) घटित हो चुकी है जबकि दूसरे में नहीं। इन दोनों समूहों की पुरानी परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन करके यह पता लगाने का प्रयत्न किया जाता है कि जिन समूह में वह घटना घटित हुई है वह किन कारणों से हुई है। संक्षेप में, ऐतिहासिक घटना-चक्रों का परीक्षण या वर्तमान घटनाओं या अवस्थाओं के कारणों की खोज कार्यान्तर-तथ्य परीक्षण कहलाता है।

Scanned with CamScanner